25-04-2021 to 30-04-2021 Online Classes
Name- Rama ...

तुलनात्मक शासन एवम् राजनीति

* आधुनिक विचारकों के अनुसार तुलनात्मक राजनीति अपने आप में राजनीति विज्ञान की कोई शाखा नहीं है बल्कि इसकी आधारशिला है।
* सबसे पहले अरस्तु ने विभिन्न नगर-राज्यों की इतिहास के आधार पर शासन प्रणालियों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया था।
* अरस्तु के वर्गीकरण के दो आधार थे प्रथम क्या शासन को एक व्यक्ति चलाता है, गिने-चुने व्यक्ति चलाते हैं, या बहुत सारे व्यक्ति चलाते हैं। दूसरा- क्या वहाँ का शासन सामान्य कोटि का है या भ्रष्ट कोटि का है।
* अरस्तु ने एक व्यक्ति के सामान्य कोटि के शासन को राजतंत्र की संज्ञा दी है।
* अरस्तु के अनुसार सामान्य स्थिति में राजतंत्र उत्तम होता है परन्तु राजा की शक्ति पर कोई अंकुश नहीं होने के कारण वह धीरे-धीरे भ्रष्ट होकर निरंकुश-तंत्र में बदल जाता है। निरंकुशतंत्र एक व्यक्ति का भ्रष्ट शासन है।
* कुछ गिने चुने लोग-निरंकुश शासक को पद से हटाकर अभिजाततंत्र स्थापित कर देते हैं।
* अभिजाततंत्र विकृत होकर गुटतंत्र में परिणत हो जाता है।
* जनसाधारण विद्रोह करके गुटतंत्र को समाप्त कर देता है और बहुतंत्र की स्थापना करता है। बहुतंत्र का विकृत रूप आधुनिक प्रजातंत्र है।

* अरस्तु के अनुसार ऐसा भ्रष्ट शासन भी ज्यादा दिन नहीं चल पाता और कोई सुलझा हुआ राजनीतिज्ञ उसे हटाकर राजतंत्र स्थापित कर देता है।
* सारे विश्लेषण के बाद अरस्तु इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि स्थिर शासन-प्रणाली विकसित करने के लिए ... और

Scanned By Scanner Go

अभिजाततंत्र का समन्वय उपयुक्त होगा जिसे उसने 'मिश्रित संविधान' की संज्ञा दी है। इसके अन्तर्गत सत्ता का प्रयोग गिने-चुने लोग या विशेषज्ञ ही करेंगे। परन्तु वे जनसाधारण की सहमति से शासन चलायेंगे।

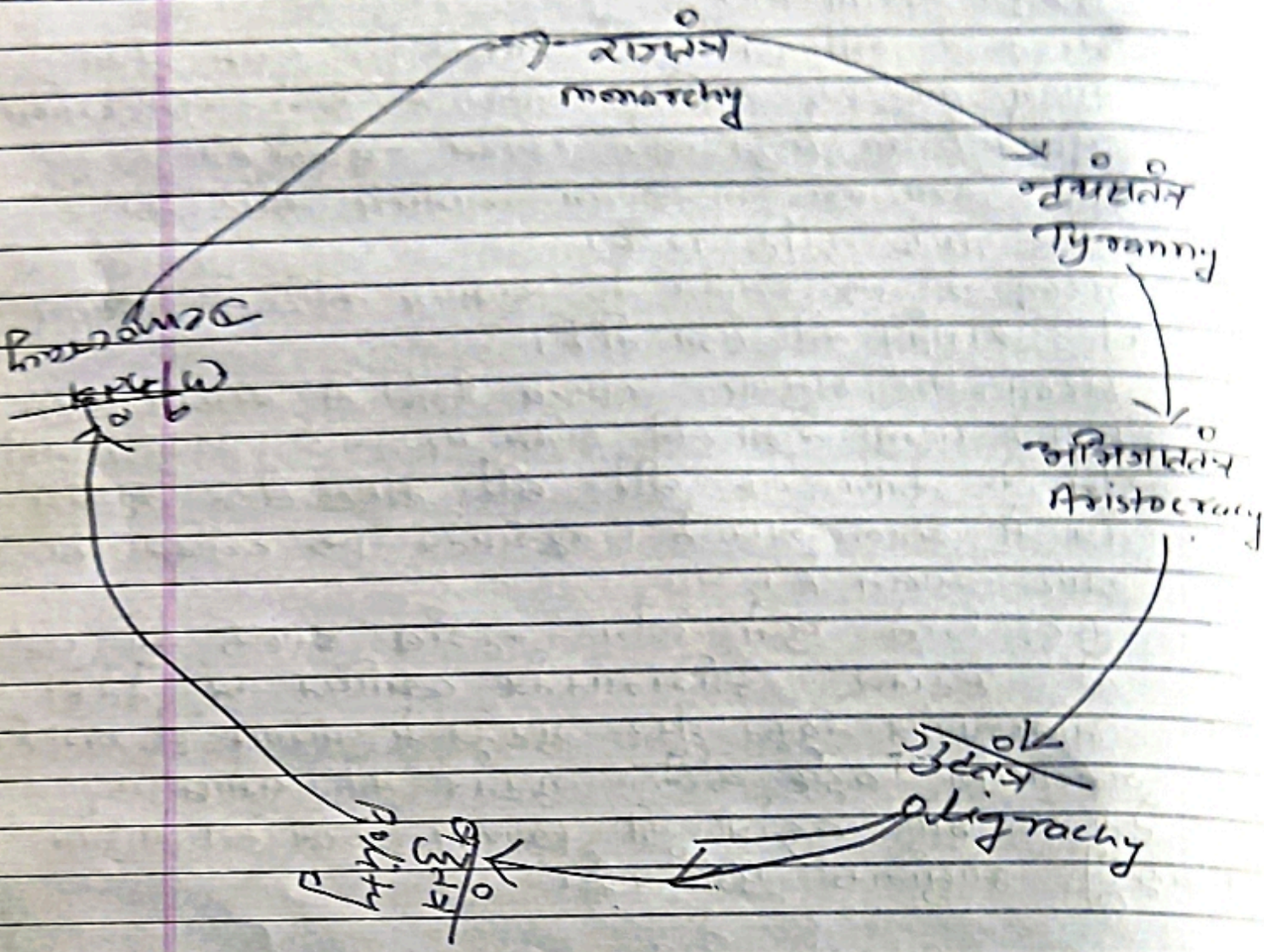

Pol-sc (H)
part I
paper-II

Dr. Rama kant Pandey
S.R.A.P college
Bara chakiya

Scanned By Scanner Go